



द बगि पकिचर: समुद्री सुरक्षा की चुनौतियाँ

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारत के रक्षा मंत्री ने 8वीं [आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक](#) (ASEAN Defence Ministers Meeting- ADMM) प्लस को संबोधित किया।

- [एडीएमएम प्लस](#) (ADMM-Plus) [आसियान](#) (ASEAN) और उसके आठ संवाद भागीदारों (देशों) का एक मंच है।

प्रमुख बद्धि:

- इस बैठक में भारत द्वारा समुद्री सुरक्षा पर चर्चा जताई गई तथा [हृदि-प्रशांत कषेत्र](#) में नयिम-आधारति व्यवस्था का आह्वान किया गया।
 - भारत ने दक्षिण चीन सागर (South China Sea) में स्वतंत्र नौवहन का मुद्दा भी उठाया।
- [दक्षिण चीन सागर](#) (South China Sea) के महत्त्वपूर्ण समुद्री गलियारों में चीन का प्रतगामी व्यवहार (Regressive Behavior) संपूर्ण समुद्री सुरक्षा के समक्ष चुनौती बना है।
 - हृदि-प्रशांत कषेत्र की शांति, स्थिरता, समृद्धि और विकास हेतु समुद्री संचार का शांतपूरण उपयोग महत्त्वपूर्ण है।
- इस बैठक में आतंकवाद को वैश्विक शांति के समक्ष सबसे बड़ा खतरा बताया गया है।

आसियान, भारत और चीन

- **स्वतंत्र हृदि-प्रशांत कषेत्र:** भारत द्वारा हृदि-प्रशांत कषेत्र में कषेत्रीय प्रभुता एवं सम्मान के लिये एक खुली और समावेशी व्यवस्था कायम करने, देशों की अखंडता, बातचीत के माध्यम से विवादों का शांतपूरण समाधान और अंतरराष्ट्रीय नियमों और कानूनों के पालन पर जोर दिया गया।
 - भारत अंतरराष्ट्रीय जलमार्गों में नौवहन, स्वतंत्र अबाधति वाणजिय उद्धानों का समर्थन करता है।
 - भारत हृदि-प्रशांत कषेत्र में अपने साझा दृष्टिकोण के कार्यान्वयन हेतु महत्त्वपूर्ण प्लेटफॉर्म के रूप में आसियान के नेतृत्व वाले तंत्र के उपयोग का भी समर्थन करता है।
- **चीन और आसियान:** चीन [संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून संधि](#) (UN Convention on the Law of the Sea-UNCLOS) में इस दक्षिण चीन सागर पर अपने दावे से संबंधित मामले को हार चुका है, उसने UNCLOS में एक और मामला दर्ज किया है तथा पाँच अन्य देशों और चीन के मध्य आचार संहिता (Code of Conduct Negotiations) पर बातचीत चल रही है।
- **चीन और भारत:** लद्दाख सीमा पर भारत के साथ चल रहे संघर्ष के कारण दक्षिण चीन सागर मुद्दे पर भारत की राय को लेकर चीन बहुत अधिक चर्चित नहीं है। भारत द्वारा समुद्री मुद्दों पर चीन पर दबाव बनाए जाने की उम्मीद है।
 - इसके अलावा भारत द्वारा अभी तक दक्षिण चीन सागर में अपने व्यापक हितों का वसितार नहीं किया गया है, इसलिये यह भारत के लिये अमेरिका, जापान या ऑस्ट्रेलिया के समान किसी बड़े खतरे की बात नहीं है।
 - हालाँकि चीन भारत और अन्य शक्तियों जैसे [कवाड राष्ट्रों](#) (QUAD Nations) के साथ समन्वय में रुचिरिखता है क्योंकि इन देशों के मध्य हृदि-प्रशांत कषेत्र के लिये समावेशी नीतियों को शुरू करने के बारे में बातचीत चल रही है।
- **चीन की परमाणु नीति:** [स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट](#) (Stockholm International Peace Research Institute-SIPRI) के अनुसार, चीन की निर्धारित परमाणु नीति के तहत चीन के पास लगभग 8-10 परमाणु पनदुब्बियाँ हैं जो 10,000 किलोमी की दूरी तक मिसाइलों को दागने में सक्षम हैं।
 - चीन जवाबी हमले की स्थिति में 'फायर ऑन वार्निंग' (Fire on Warning) नामक एक प्रणाली भी विकसित कर रहा है।
- **दक्षिण चीन सागर का महत्त्व:** अपनी भौगलिक स्थिति के कारण दक्षिण चीन सागर रणनीतिक तौर पर अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह हृदि महासागर और प्रशांत महासागर को जोड़ने वाली एक कड़ी के रूप में कार्य करता है।
 - [व्यापार और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन](#) (United Nations Conference on Trade and Development- UNCTAD) के अनुसार, वैश्विक नौवहन का एक-तहाई हस्तिता इससे होकर गुजरता है, जिससे अरबों का व्यापार होता है जो इसे एक महत्त्वपूर्ण भू-राजनीतिक जल निकाय बनाता है।
 - यह खनजि, हाइड्रोकार्बन, तेल और गैस से भी समृद्ध कषेत्र है।
- **चीन की रणनीति:** चीन हृदि-प्रशांत महासागर को एक ही कषेत्र के रूप में मान्यता नहीं देता है, लेकिन वह दोनों महासागरों को अपने हितों के प्रमुख कषेत्रों के रूप में मानता है। हृदि और प्रशांत महासागर हेतु चीन द्वारा दो अलग-अलग रणनीतियाँ अपनाई जाती हैं।

- पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र में चीन का मुख्य हति इसकी एक पूर्ण स्पेक्ट्रम प्रभुत्व रणनीति (Full Spectrum Dominance Strategy) द्वारा संचालित है।
 - यह वह क्षेत्र है जहाँ चीन अपनी भौगोलिक सीमा का विस्तार करने हेतु अधिग्रहण जैसे शब्दों का उपयोग ग्रेज़ोन संचालन (Grayzone Operations) के द्वारा करता है।
- हालाँकि हिंद महासागर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति और लाभ को धीरे-धीरे बढ़ाने के लिये चीन हतिधारक शब्द का उपयोग करता है।
- चीन न केवल सैन्य बल से बल्कि **बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिवि** (Belt and Road Initiative) के ज़रिये भी अपना प्रभाव बढ़ा रहा है।
- हालाँकि भारत के संवेदनशील क्षेत्रों से चीन खुद को दूर रख रहा है, क्योंकि वह भारत को कोई भी ऐसा मौका नहीं देना चाहता है जिस पर भारत द्वारा आपत्त उठाई जाए और यदि अगर ऐसा होता भी है तो चीन चाहता है कि आक्रामक रुख भारत द्वारा ही अपनाया जाए न कि चीन द्वारा।

चीन के प्रतियोगितात्मक प्रतिक्रिया:

- **नाटो:** **उत्तर अटलांटिक संधि संगठन** (North Atlantic Treaty Organization- NATO) के देश चीन द्वारा ग्लोबल कॉमन्स (Global Commons) को स्थापित करने हेतु अंतरराष्ट्रीय आचार संहिता के उल्लंघन से नाखुश हैं।
 - हाल ही में पहली बार आयोजित नाटो शिखर सम्मेलन में चीन को स्पष्ट रूप से सुरक्षा के संदर्भ में एक जोखिम के रूप में वर्णित किया है।
- **क्वाड:** चीन ऑस्ट्रेलिया और जापान का एक बड़ा व्यापारिक भागीदार है। कई जापानी उद्योगों के चीन में अपने वनिरिमाण आधार स्थापित हैं। बहुत सारे अमेरिकी उद्योग चीनी कच्चे माल और आपूर्ति शृंखलाओं से भी जुड़े हुए हैं।
 - इसके बावजूद QUAD के सदस्य ऑस्ट्रेलिया और जापान ने एक संयुक्त बयान जारी कर कहा कि चीन उनके लिये एक खतरा है क्योंकि चीन ने ऑस्ट्रेलिया को मिसाइल हमले की धमकी दी है।
 - ऑस्ट्रेलिया अब चीन को अपने उत्तरी हिससे, डार्विन बेस से हटाने की कोशिश कर रहा है।
- **यूरोपीय संघ और ब्रिटन:** **यूरोपीय संघ के देशों** (EU countries) और यूनाइटेड किंगडम के चीन के साथ पुराने मैत्रीपूर्ण संबंध होने के बावजूद वे चीन को वैश्विक शांति और सुरक्षा के लिये खतरा मानते हैं।
- **G7 देश:** **G7 राष्ट्र** (G7 Nations) जिस समस्या का सामना कर रहे हैं, उसके दो पहलू हैं:
 - पहला, दक्षिण चीन सागर और **ताइवान** (Taiwan) के संबंध में चीनी सैन्य आक्रमण।
 - ताइवान के हवाई क्षेत्र में चीन के विमान और लड़ाकू विमानों की घुसपैठ हो चुकी है। चीन अपने पुनः एकीकरण या ताइवान पर ज़बरन कब्ज़ा करने हेतु दबाव बना रहा है।
 - दूसरा, वैश्विक सुधार का मुद्दा है। वैश्विक मंदी जिससे केवल चीन ने ही वापसी की है, के कारण संघर्षों पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया गया है।
 - बड़े देश चीन को टककर देने की कोशिश कर रहे हैं। G7 देशों की बिल्ड बैक बेटर (Build Back Better) पहल का उद्देश्य चीन के ट्रिलियन-डॉलर के बेल्ट एंड रोड इंफ्रास्ट्रक्चर पहल को प्रतिसंतुलित करना है।
 - रूस मध्य एशिया में चीन के तेज़ी से बढ़ते प्रभाव से भी चिंतित है क्योंकि यह इस क्षेत्र में रूस के मज़बूत प्रभाव को प्रभावित करेगा।

आगे की राह:

- **विकसित लोकतांत्रिक राष्ट्रों की भूमिका:** अमेरिका या रूस जैसे देशों को विश्व व्यवस्था में चीन को पीछे छोड़ना होगा जो कि एक सत्तावादी देश (Authoritarian country) है।
 - **शिनजियांग** (Xinjiang), ताइवान, तिब्बत और दक्षिण चीन सागर के मुद्दे विश्व शांति के लिये एक बड़ा खतरा है।
- **भारत का बहुआयामी दृष्टिकोण:** भारत को चीन का मुकाबला करने के लिये न केवल एक मज़बूत सैन्य रणनीति ज़रूरी है बल्कि इसे बुनियादी ढाँचे के घटक, प्रौद्योगिकी से संबंधित पहलू सहित एक बहुआयामी दृष्टिकोण को अपनाने की भी आवश्यकता है।
 - हिंद महासागर में भारत को अपनी प्रमुखता और मुखरता बनाए रखनी चाहिये तथा चीन को उन क्षेत्रों में काम करने से रोकना चाहिये जो भारत के लिये महत्त्वपूर्ण हैं।
 - भारत को प्रशांत क्षेत्र पर अपना प्रभाव स्थापित करने के लिये अपने सहयोगियों के साथ सहयोग करने तथा संबंधों को सुधरने की आवश्यकता है क्योंकि यह वह स्थान है जहाँ चीन की स्थिति अत्यधिक अस्थिर और संवेदनशील है।
 - भारत की सामुद्रिक नीतियों का चीन की नीतियों के साथ तालमेल स्थापित करना होगा।
- **चीन के बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं के स्तर से तालमेल:** अमेरिका के वरिष्ठ के बावजूद चीन इज़रायल में एक बंदरगाह बनाने की योजना बना रहा है।
 - चीन का एक बंदरगाह अफ्रीका के जिबूती (Djibouti) तथा एक पाकिस्तान के **गुवाडर** (Gwadar) जो ईरान के भी करीब है, में स्थापित हैं तथा बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिवि के ज़रिये चीन की पहुँच यूरोप में भी है।
 - भारत की रणनीतिको चीन के स्तर के उस प्रयास से मेल खाना होगा जो वह अफ्रीकी देशों में बुनियादी ढाँचे के निर्माण में कर रहा है।
- **सामूहिक रूप से आतंकवाद का मुकाबला:** आतंकवादियों के मध्य नेटवर्किंग का स्तर अब काफी खतरनाक हो चुका है।
 - केवल सामूहिक सहयोग से ही आतंकी संगठन और उनके नेटवर्क पूरी तरह से बाधित हो सकते हैं तथा अपराधियों की पहचान करके उन्हें आतंकवादी घटनाओं के प्रति ज़िम्मेदार ठहराया जा सकता है।
 - आतंकवाद को बढ़ावा देने, समर्थन करने और वित्तपोषित करने तथा आतंकवादियों को पनाह देने वालों के खिलाफ कड़े कदम उठाए जाने चाहिये।
- **प्रौद्योगिकी का उन्नयन करना:** **रैनसमवेयर** (Ransomware) वानाक्राई (Wannacry) हमलों तथा क्रिप्टोक्यूरेंसी की चोरी जैसे **साइबर खतरों** के मुद्दे एक बहु-हतिधारक दृष्टिकोण का आह्वान करते हैं, जो लोकतांत्रिक मूल्यों द्वारा निर्देशित हो तथा एक शासन संरचना के साथ खुला और समावेशी हो, के साथ साइबरस्पेस के भविष्य को संचालित करे।
 - वर्तमान वैश्विक चुनौतियों का समाधान उन पुरानी प्रणालियों से नहीं किया जा सकता है जिनमें अतीत की समस्याओं के समाधान के तौर पर डिज़ाइन किया गया था।

नष्कऱऱः

- हदऱ-डऱशांत और दकषणऱ चीन सागर कषेतर समुदरी सुरकषा की चुनौतरऱों से संबंढतर डऱमुख कषेतर हैं जहाँ डररत और अनूड समरन वचऱरधररर वरले देशों को समनुवतर तररीके से कररूड कररनर हूंगर ।
- दकषणऱ चीन सागर वूडरडक चरूचर कर एक महतूतूवडूरण मुददर बनर हुआ है । हरलूँक डररत सहतर कऱई देश अभी डी चीन से सीधे तूँर डर डङ्गऱने के इकूक नही है ।

PDF Referenece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/the-big-picture-maritime-security-challenges>

